

डॉ. डेविड हॉवर्ड, जोशुआ-रूथ, सत्र 13, कनानियों का विनाश

© 2024 डेविड हॉवर्ड और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेविड हॉवर्ड रूथ के माध्यम से जोशुआ की पुस्तकों पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 13 है, कनानी भ्रमण का विनाश।

फिर से हैलो। इस खंड में, मैं कनानियों के इज़राइली विनाश के बारे में कांटेदार, पेचीदा प्रकार के प्रश्न को संबोधित करना चाहता हूँ। यह एक ऐसी समस्या है जो उन पहले प्रश्नों में से एक है जो आमतौर पर तब पूछा जाता है जब मैं जोशुआ की पुस्तक पर अपनी टिप्पणी लिख रहा था। जिन लोगों को मैं जानता था कि मैं इस पर काम कर रहा था।

मुझे आमतौर पर दो में से एक प्रश्न मिलता है। एक तो यह कि इतने लंबे दिन और सूर्य के स्थिर खड़े रहने से क्या हो रहा है? और फिर दूसरा सवाल यह था कि यहां कनानी लोगों के सामूहिक विनाश नरसंहार के बारे में क्या? और इसलिए, मैं यहां उस दूसरे प्रश्न का उत्तर देना चाहता हूँ। और मुझे लगता है कि कुछ चीजें हैं जिनसे हमें परेशान होना चाहिए और हमें असहज होना चाहिए।

हमें कभी भी दुष्टों की मृत्यु पर प्रसन्न नहीं होना चाहिए। परमेश्वर स्वयं दुष्टों की मृत्यु से प्रसन्न नहीं होता। लेकिन ईश्वर भी एक पवित्र ईश्वर है और उसके कुछ मानक हैं।

और कनानवासी उससे बहुत पीछे रह गए, इस प्रकार की समस्या से बहुत दूर। हम एक तरह से, बहुत से ईसाई इसके बारे में मूल रूप से आम तौर पर जागरूक हैं। लेकिन आइए कुछ विशिष्ट ग्रंथों पर नजर डालें जो इसे काफी विस्तार से दिखाते हैं।

इसलिए, सबसे पहले जो मैं देखना चाहता हूँ वह व्यवस्थाविवरण अध्याय 7 में है। इसलिए, यदि आप कृपया अपनी बाइबिल लें और उसे खोलें, तो हम इसका पहला कथन देखेंगे। इसलिए, मूसा इस्राएलियों से वादा किए गए देश में प्रवेश करने से पहले बात कर रहा है। और वह उन्हें निर्देश दे रहा है कि वे ऐसा कब करें क्योंकि वह स्वयं वहां नहीं होगा।

इसलिए, व्यवस्थाविवरण 7, पद 1, जब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें उस देश में ले आएगा जिस पर तुम अधिकार करने को जा रहे हो, और तुम्हारे साम्हने से बहुत सी जातियों को दूर कर देगा। और अब यहाँ छह राष्ट्रों का उल्लेख है, हिती, गिर्गाशी, एमोरी, कनानी, परिज्जी, हिव्वी, और यबूसी। वह वास्तव में सात है।

सात राष्ट्र तुमसे अधिक संख्या में और शक्तिशाली हैं। हमने उस अंश को अन्य संदर्भों में देखा है। परन्तु अब पद 2 में, जब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उन्हें तुम्हारे वश में कर दे, और तुम उन्हें हरा दो, तब तुम्हें उन्हें पूर्ण विनाश के लिये समर्पित कर देना चाहिए।

तू उन से वाचा न बान्धना, और न उन पर दया करना। तुम उनके साथ ब्याह न करना, और न अपनी बेटियां उनके बेटों को ब्याह देना, और न उनकी बेटियां अपने बेटों के लिये ले लेना। क्यों? इसका कारण श्लोक 4 में है, क्योंकि वे तुम्हारे पुत्रों को मेरे पीछे चलने से दूसरे देवताओं की सेवा करने से रोक देंगे। तब यहोवा का क्रोध तुम पर भड़क उठेगा। वह तुम्हें शीघ्र ही नष्ट कर देगा। परन्तु तुम उनसे इसी प्रकार निपटोगे। उनकी वेदियों को तोड़ डालो, उनके खम्भों को टुकड़े-टुकड़े कर दो, उनकी अशेरा (बाल की पत्नी अशेरा के सम्मान में खम्भे) को काट डालो, और उनकी खुदी हुई मूर्तियों को आग में जला दो।

तो वहीं हम समस्या का विवरण देखते हैं। हम इसके औचित्य के बारे में तर्क का एक सूत्र भी देखते हैं।

लेकिन समस्या का बयान वहां एक वास्तविक बयान है कि इन लोगों को मिटा दो, उन्हें पूर्ण विनाश के लिए समर्पित कर दो। श्लोक 2, उनके साथ कोई वाचा न बांधो, आपस में विवाह मत करो। इसी तरह के निर्देश व्यवस्थाविवरण अध्याय 20 में आते हैं।

तो कृपया पद 16 से प्रारंभ करते हुए व्यवस्थाविवरण 20 की ओर मुड़ें। और यहां एक पैराग्राफ के बीच में आते हुए, यह सिर्फ इतना कहता है, इन लोगों के शहरों में जो प्रभु आपको विरासत के रूप में दे रहे हैं। दूसरे शब्दों में, कनानियों के सभी शहर।

तू किसी जीवित प्राणी को न बचाएगा जो सांस लेता है, परन्तु तू उन्हें पूर्ण विनाश के लिये समर्पित कर देगा। उस प्रकार की प्रतिध्वनि व्यवस्थाविवरण 7. हिती, एमोरी, कनानी, परिज्जी, हिव्वी, यबूसी, जैसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने आज्ञा दी है, कि वे ऐसा न करें, और फिर, इस कारण से कि वे तुम्हें अपने सब घृणित कामों के अनुसार करना न सिखाएं वे काम जो उन्होंने अपने देवताओं के लिये किए हैं, इस कारण तुम अपने परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध पाप करते हो। तो, यह फिर से है, ऐसा करना ताकि उनकी अपनी पूजा दूषित न हो, जिसके बारे में हम कुछ मिनटों में बात करेंगे।

यह बात जोशुआ की किताब में भी दोहराई गई है। तो, यहोशू अध्याय 6 की ओर मुड़ें, और जब वे जेरिको में जाने और इस शहर को लेने की तैयारी कर रहे हैं, तो श्लोक 17 को देखें, उदाहरण के लिए, यहोशू कहता है, फिर से, एक पैराग्राफ के बीच में, यहोशू कहता है, शहर और सभी में जो कुछ उसके भीतर है वह विनाश के लिये यहोवा को समर्पित किया जाएगा। केवल राहाब को बचाएं, इत्यादि।

तो हम इस तथ्य से बच नहीं सकते कि कनानियों के इस पूर्ण विनाश की आज्ञा ईश्वर ने दी है, और इसलिए हम इसे कैसे उचित ठहरा सकते हैं? अब, कई उत्तर हैं, और कुछ, निश्चित रूप से, बस यही कहेंगे, ठीक है, यह सिर्फ इज़राइली भगवान या इज़राइली धर्म की घृणित प्रकृति को दर्शाता है। यह अक्षम्य है, और हमें इस प्रकार की प्रथाओं को अस्वीकार करने की आवश्यकता है। हमें ऐसे किसी भी ईश्वर को अस्वीकार करने की आवश्यकता है जो उन चीजों को आदेश देगा, और यह समग्र रूप से बाइबिल, या निश्चित रूप से पुराने नियम की अस्वीकृति है।

यहां तक कि कई ईसाई यह तर्क देंगे कि यह पुराने नियम की उप-ईसाई प्रकृति को दर्शाता है, कि पुराने नियम के भगवान को इस तरह क्रोध मिला है। निश्चित रूप से, नये नियम का परमेश्वर ऐसा कभी नहीं करेगा। वैसे, ये तर्क इस तथ्य को नजरअंदाज करते हैं कि यीशु स्वयं क्रोधित हुए और कभी-कभी हिंसक भी हुए।

निश्चित रूप से, आप जानते हैं, उसने मंदिर में पैसे बदलने वालों को बाहर फेंक दिया था, और गॉस्पेल में से एक में तो यह भी कहा गया है कि वह गया और एक चाबुक तैयार किया। तो, यह क्रोध का आवेश नहीं था कि वह बेकाबू है, बल्कि वह जानबूझकर गया और अपने स्वयं के हिंसात्मक कार्य के लिए तैयार हुआ। जाहिर तौर पर यह धार्मिक गुस्सा था।

हम पुराने टेस्टामेंट की तुलना में नए टेस्टामेंट में नरक के बारे में अधिक सीखते हैं। ईश्वर वहां क्रोध का देवता है इसलिए वह द्वंद्व एक झूठा द्वंद्व है। हम ईश्वर को प्रेम के ईश्वर के रूप में देखते हैं, निश्चित रूप से पुराने नियम में भी, यहाँ तक कि यहोशू की पुस्तक में भी।

हमने देखा है कि राहाब जैसे व्यक्ति पर ईश्वर की कृपा बढ़ी है, और इसलिए मैं कहूंगा कि यह एक वैध तर्क नहीं है। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि हमारे अंदर अभी भी बेचैनी बनी हुई है। हमें वह पाना ही होगा।

तो, आइए इसे एक बड़े संदर्भ में समझने की कोशिश करें, और मेरे पास कई बिंदु हैं जिनके माध्यम से मैं उस तरह की मदद करना चाहूंगा, और पहला केवल एक अनुस्मारक है कि जब भगवान ने इस्राएलियों को बाहर निकालने की आज्ञा दी थी कनानियों, उन्हें नष्ट करना या उन्हें बाहर निकालना, यह परमेश्वर का इस्राएल को उन गरीब कनानियों पर विशेषाधिकार देना नहीं था जिनके पास भूमि का अधिकार था। पहली बात तो हम यह कह सकते हैं कि कनानियों के पास भी वह भूमि नहीं थी। यहाँ तक कि बाद में इस्राएलियों के पास स्वयं भूमि नहीं थी।

भूमि सदैव ईश्वर की रही है और रहेगी। भजनहार कहता है, भजन 24, श्लोक 1 में, पृथ्वी और उसमें जो कुछ है वह सब प्रभु है। भजन 50 इस बारे में बात करता है कि कैसे वह हजारों पहाड़ियों पर मवेशियों का मालिक है।

और इसलिए, यह परमेश्वर कनानियों को उनकी भूमि से दूर नहीं कर रहा है। यह भगवान कह रहा है, यह मेरी भूमि है। मैं दयालुतापूर्वक कनानियों को कुछ समय के लिए वहां रहने की अनुमति देने जा रहा हूँ, लेकिन वह समय आने वाला है जब मैं उनके साथ कुछ करने जा रहा हूँ, उनके खिलाफ, अपने लोगों को अंदर लाऊंगा।

और तथ्य यह है कि हम यह भी कह सकते हैं कि भगवान पसंदीदा नहीं दिखाते। तो हां, वह कनानियों को उनके पाप के कारण बाहर निकाल रहा था, और हम इसे एक मिनट में थोड़ा और विकसित करेंगे, लेकिन साथ ही, उसने इस्राएलियों के साथ भी ऐसा ही किया जब वे इसके हकदार थे। न्यायाधीशों की पुस्तक में, जब भी वे प्रभु से विमुख हुए, तो वह कुछ विदेशी उत्पीड़कों को उनके पास लाया और उन्हें अपनी अधीनता में डाल दिया।

एक बड़ा उदाहरण यह है कि वर्षों बाद, जब उनका पाप एक निश्चित बिंदु तक पहुंच गया था, तो भगवान ने इज़राइल के राज्य, उत्तरी राज्य को अशशूरियों द्वारा बंदी बना लेने की अनुमति दी। और वे हर जगह इस तरह बिखरे हुए थे कि उनमें जातीय पहचान का कोई एहसास नहीं रह गया था। हम इज़राइल की 10 खोई हुई जनजातियों के बारे में सुनते हैं।

बाद में यहूदा में, बेबीलोनियों ने आकर, इस्राएल के पाप के कारण, फिर से, शहर को नष्ट कर दिया। इसलिए ईश्वर पसंदीदा नहीं था, भले ही इज़राइल स्पष्ट रूप से उसके चुने हुए लोग थे। वह चाहता था कि यदि कनानवासी चाहें तो वे स्वयं उसके पास आएँ।

फिर, राहब उस व्यक्ति का उदाहरण है जिसने ऐसा किया। लेकिन जो भी हो, पहली बात तो यह है कि पृथ्वी यहोवा की है, कनानियों की नहीं, इस्राएलियों की नहीं। दूसरी बात जो हम कह सकते हैं, हमने पहले ही व्यवस्थाविवरण अनुच्छेदों में इसके संकेत देख लिए हैं, और वह यह है कि परमेश्वर ने कनानियों के पाप के कारण उनके पूर्ण विनाश की आज्ञा दी थी।

अब, एक स्तर पर, हम कह सकते हैं कि, जैसा कि पॉल कहता है, सभी ने पाप किया है, और परमेश्वर की महिमा से रहित हो गए हैं। तो, आप जानते हैं, कोई भी जीवन का हकदार नहीं है। हम सभी सज़ा और मौत के पात्र हैं।

लेकिन जाहिर है, भगवान ने, अपनी कृपा से, हमें मुक्ति का एक रास्ता दिया है। लेकिन प्राचीन दुनिया में भी, कनानी लोगों के पाप उनके आसपास के लोगों से ऊपर और उससे भी ऊपर के स्तर तक बढ़ गए थे। तो, आइए उनमें से कुछ के बारे में बात करें।

आइए उत्पत्ति पर वापस जाएं और इस संदर्भ में, उत्पत्ति अध्याय 15 में इब्राहीम को कहे गए परमेश्वर के शब्दों के पहले संदर्भ को देखें। तो, उत्पत्ति 15 महान अनुच्छेदों का हिस्सा है जो हमें वे तत्व देते हैं जिन्हें हम कह सकते हैं इब्राहीम वाचा, अध्याय 12, अध्याय 15, अध्याय 17। और इस अध्याय में, हम यहाँ उस खंड के मध्य में जायेंगे जब इब्राहीम को यह दर्शन हो रहा है।

वह एक सपने में सो रहा है, और भगवान उससे कहते हैं कि वह उसे यह भूमि और उसके वंशजों के लिए भूमि देने जा रहा है। परन्तु उसके वंशज 400 वर्ष के लिये दूसरे देश में निर्वासित होने जा रहे हैं। और हम इसे श्लोक 13 के आसपास देखते हैं।

और पद 14 कहता है, मैं उस राष्ट्र का न्याय करूंगा जिसकी वे सेवा करते हैं। और उसके बाद, वे बड़ी संपत्ति लेकर निकलेंगे। और वह उस समय की प्रतीक्षा कर रहा है जब वे मिस्र में होंगे।

तब परमेश्वर मिस्र पर विपत्तियाँ लाता है और फिर लाल सागर में फिरौन को नष्ट कर देता है। उस समय भी स्मरण करो, कि जब इस्राएली चले गए, तो उन्होंने इस्राएलियों को उनकी सम्पत्ति पर लाद दिया, और कहा, यहां से निकल जाओ, और हमारा सामान ले लो। और इसलिए, यह इस प्रकार की पूर्ति करता है।

लेकिन फिर आगे बढ़ते हुए, पद 15 कहता है, जहां तक तुम्हारी बात है, तुम शांति से अपने पितरों के पास जाओगे, और अच्छे बुढ़ापे में दफनाए जाओगे। तो, यह इब्राहीम पर आशीर्वाद का एक अद्भुत हिस्सा है। और फिर यह कहता है, वे यहां वापस आएं।

परमेश्वर कनान में इब्राहीम से बात कर रहा है, और उसके वंशज कुछ समय के लिए मिस्र में रहेंगे। लेकिन उनका कहना है कि वे वापस आएं। और फिर श्लोक 16 के अंत में इसका कारण बताता है, क्योंकि एमोरियों का अधर्म अभी तक पूरा नहीं हुआ है।

एमोराइट शब्द का प्रयोग यहाँ विभिन्न तरीकों से किया गया है, बाइबिल के बाहर भी। लेकिन यहाँ, यह मूलतः कनानियों का पर्याय है। किसी एक विशिष्ट जन समूह का नहीं, बल्कि कनान में राष्ट्रों के पूरे समूह का प्रतिनिधि।

तो, यह मूल रूप से कह रहा है कि कनानियों का अधर्म अभी तक पूरा नहीं हुआ है। और इसका तात्पर्य यह है कि एक ऐसा समय आने वाला है जब एमोरियों का अधर्म चरम बिंदु पर पहुंच गया है, घड़ा भर गया है, और अब उस बिंदु तक बढ़ रहा है जहां भगवान अब कह रहे हैं, मैं इसे बर्दाश्त नहीं करूंगा आगे। ऐसा प्रतीत होता है कि यहाँ मुद्दा यही है।

और जब ऐसा होगा, तो परमेश्वर इस्राएल को मिस्र से इस भूमि पर वापस लाएगा। और इस्राएल कनानियों के विरुद्ध दण्ड का परमेश्वर का साधन बनने जा रहा है। फिर, ईश्वर कोई उपकार नहीं करता, क्योंकि ईश्वर इस्राएल को दंडित करने के लिए बाद में अन्य राष्ट्रों का उपयोग करता है।

लेकिन इस मामले में, इज़राइल को कनानियों को उनके पाप के लिए दंडित करने के लिए भगवान के साधन के रूप में देखा जाता है। अब, ऐसे अन्य अनुच्छेद भी हैं जो कनानियों के पाप को दर्शाते हैं। और उनमें से एक लेवितिकस अध्याय 18 में एक बहुत ही नाटकीय मार्ग है।

इसलिए, यदि आप मुड़ें, तो कृपया उस ओर मुड़ें। और यह अनुच्छेद उन सभी घृणित कार्यों की सूची के संदर्भ में एक भयानक अनुच्छेद है जो लोग करते हैं।

तो, आइए अध्याय की शुरुआत, लैविकस 18, श्लोक 2 से शुरू करते हुए शुरू करें। भगवान ने मूसा से बात करते हुए कहा, इस्राएल के लोगों को बचाओ। मैं तुम्हारा स्वामी, परमेश्वर हूँ। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहीवा हूँ। श्लोक 3, मत करो, जैसा मिस्र देश में, जहां तुम रहते हो, लोग करते हैं वैसा तुम न करना।

तो, दूसरे शब्दों में, आप जहां से आए हैं वहां की प्रथाओं को कायम न रखें। और तुम वैसा न करना जैसा वे कनान देश में करते हैं, जहां मैं तुम्हें ले आता हूँ। दूसरे शब्दों में, जहां से आप आए हैं वहां उन्होंने वैसा न करें जैसा उन्होंने किया, और जहां आप जा रहे हैं वहां की प्रथाओं को न अपनाएं।

उनकी विधियों पर मत चलो। उपपाठ के अंतर्गत, अनकहा भाग है, मेरी विधियों पर चलो। यह वही शब्द है जिसका उपयोग कानून, भगवान के शब्द के बारे में बात करने के लिए किया जाता है।

इसलिए मिस्त्रियों या कनानियों की विधियों पर न चलो, परन्तु मेरी विधियों पर चलो। तुम्हें मेरे नियमों का पालन करना होगा। श्लोक 4, मेरी विधियों का पालन करो, उन पर चलो।

मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। इसलिए तुम मेरी विधियों और नियमों आदि का पालन करोगे। अब, छंद 6 से 23 सभी प्रकार की यौन विकृति की एक पूरी सूची है।

हम सभी विवरणों में नहीं जाएंगे, लेकिन मुझे हमेशा ऐसा लगता है कि इस खंड को पढ़ने के बाद मुझे अपने हाथ धोने या स्नान करने की आवश्यकता है। यह बस है, वहाँ अनाचार है, वहाँ व्यभिचार है, वहाँ पाशविकता है, वहाँ समलैंगिकता है, वहाँ सब कुछ है। और इसलिए, आप इसे स्वयं देख सकते हैं।

लेकिन अब, श्लोक 24 उस पर एक तरह की टिप्पणियाँ है। आयत 24 कहती है, इन चीजों में से किसी के द्वारा अपने आप को अशुद्ध मत करो। अर्थात् इनमें से कोई भी रीति न अपनाना, क्योंकि जितने राष्ट्रों को मैं तुम्हारे साम्हने से निकाल रहा हूँ, वे अशुद्ध हो गए हैं।

तो, मुद्दा यह है कि जिन राष्ट्रों को मैं आपके सामने से निकाल रहा हूँ, दूसरे शब्दों में, एक समूह के रूप में कनानियों, श्लोक 6 से 23 में वर्णित चीजों को करने से अशुद्ध हो गए हैं। तो, ये केवल सामान्यीकृत पाप नहीं हैं जो कोई भी और हर कोई कर रहा है। परमेश्वर कह रहा है, ये कनानियों के पाप हैं।

यही कारण है कि मैं उन्हें बाहर निकालने जा रहा हूँ। आप उसके लिए मेरा साधन बनने जा रहे हैं। उन प्रथाओं को न अपनाएं।

और वह देश अशुद्ध हो गया, यहां तक कि मैं ने उसके अधर्म का दण्ड दिया, और उस देश ने अपने रहनेवालोंको उगल दिया। परन्तु तुम मेरी विधियों और आज्ञाओं आदि को मानना। फिर श्लोक 30, इसलिये मेरी आज्ञा का पालन करो, कि जो घृणित रीतियां तुम्हारे पहिले से प्रचलित थीं उन में से किसी को न मानना, और न उनके द्वारा अपने आप को अशुद्ध करना, आदि।

तो, यह एक बहुत प्रभावशाली सूची है। यह कनानियों की विशिष्ट प्रकार की विकृतियों की एक निराशाजनक सूची है। आइए एक और श्लोक, एक और परिच्छेद को देखें, और फिर हम इसके इस भाग को समाप्त करने का प्रयास करेंगे।

व्यवस्थाविवरण अध्याय 9, व्यवस्थाविवरण 9, श्लोक 4 से शुरू करें, और हम श्लोक 4 और 5 को देखेंगे। व्यवस्थाविवरण 9, श्लोक 4 कहता है कि मूसा अब इज़राइल से बात कर रहा है, आगे देख रहा है कि वे कब जाएंगे भूमि। उस ने कहा, जब तेरा परमेश्वर यहोवा उन कनानियोंको तुम्हारे साम्हने से निकाल देगा, तब अपने मन में यह मत कहना, कि यहोवा उनको मेरे धर्म के कारण इस देश से निकाल देता है। बल्कि, यह उन राष्ट्रों की दुष्टता के कारण है कि प्रभु उन्हें बाहर निकाल रहे हैं।

ऐसा इसलिए नहीं है कि, श्लोक 5, अपनी धार्मिकता या अपने हृदय की ईमानदारी के कारण नहीं कि आप भूमि पर कब्जा करने जा रहे हैं, बल्कि उन राष्ट्रों की दुष्टता के कारण है कि भगवान उन्हें बाहर निकाल रहे हैं, आदि। इसलिए, ये सभी मार्ग हमें दिखाते हैं दूसरा बिंदु जो हम कह रहे हैं, पहला बिंदु यह है कि सारी भूमि ईश्वर की है, किसी विशिष्ट व्यक्ति की नहीं। दूसरा बिंदु कनानियों के पाप के कारण है कि भगवान यह आदेश दे रहे हैं, कनानियों का पाप शानदार रूप से घृणित है, मुझे लगता है कि हम कह सकते हैं।

अब, यह बाइबिल का साक्ष्य है जिसे हम देखते हैं, और यह काफी प्रभावशाली है, लेकिन हम इसे बाइबिल के अतिरिक्त साक्ष्य में भी देख सकते हैं। पिछले 100 से अधिक वर्षों में, निकट पूर्व में पुरातात्विक रूप से खुदाई की गई है, और कनान में ही स्थानों पर कनानी पाप की भूमि का पता चला है, ये टीले जहां उन्होंने खोदा है और शहर आदि पाए हैं, और उन्हें बहुत सारे मिले हैं ऐसी कलाकृतियाँ जिनका उपयोग कनानी लोगों ने अपने मंदिरों में किया है, और बहुत कम मूर्तियाँ हैं जिनकी लोग पूजा करते हैं, छवियाँ और मूर्तियाँ हैं जिनकी लोग पूजा करते हैं। कुछ ऐसे हैं जो बाल और उसकी पत्नी अशेरा और अन्य की धातु की मूर्तियों के धातु चित्र हैं, और अशेरा को, दिलचस्प बात यह है कि, उसे हमेशा बहुत कामुक रूप से चित्रित किया जाता है।

अशेरा की मूर्तियाँ घृणित हैं और उनमें सभी सही वक्र हैं इत्यादि। वहाँ एक विशेष प्रकार की प्रथा भी है जिसे हम पवित्र वेश्यावृत्ति या सांस्कृतिक वेश्यावृत्ति कह सकते हैं। जोशुआ 2 पर व्याख्यान में, जब उन्होंने हिब्रू में वेश्या के लिए कुछ अलग-अलग शब्दों के बारे में बात की, तो एक शब्द राहब का जिक्र है, जो वेश्या के लिए सामान्य शब्द है, जो ज़ोनाह है।

राहब को इसी शब्द से बुलाया जाता है। यह वेश्या के प्रकार का शब्द है जिसे आप अधिकांश संस्कृतियों, अधिकांश समाजों में पाते हैं, लेकिन एक विशेष शब्द है जिसका उल्लेख किया जाता है। यह केदाशाह है, और इसका अनुवाद आमतौर पर पवित्र वेश्या, सांस्कृतिक वेश्या या मंदिर वेश्या के रूप में किया जाता है, और यहां विडंबना यह है कि यह शब्द कदोष शब्द से संबंधित है, और कदोष पवित्र के लिए शब्द है।

इज़राइल के जीवन में पवित्रता बनाए रखने आदि के बारे में लैव्यिकस की पुस्तक में यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण शब्द है, और इसकी विकृति यह है कि कनान में, और कभी-कभी दुख की बात है कि इसे इज़राइल में अपनाया गया था, कि वहां इस प्रकार के व्यक्तियों का वर्ग उत्पन्न हुआ मंदिर की वेश्याएं, पंथ वेश्याएं कहा जाता था, और यह एक स्त्री रूप था, लेकिन एक पुरुष पंथ वेश्या का जिक्र करते हुए, एक मर्दाना रूप, केदोष भी था। ऐसा कुछ अलग-अलग समय पर हुआ, और यहां विचार यह था कि बाल या अशेरा के अभयारण्यों में, लोग अपने अनाज का प्रसाद या अपने पशु बलिदान या बाल को चढ़ाने के लिए जो कुछ भी लाते थे, लाएंगे। वहां मंदिर में पुजारी और पुजारिनें उपस्थित होंगी, और आपको याद होगा कि मैंने एक अन्य संदर्भ में कहा था कि बाल तूफान का देवता था, और वह वह देवता था जिसने बारिश भेजी थी, कथित तौर पर, और पृथ्वी और फसलों को सींचा था, और वह उर्वरता का देवता था।

इसलिये तुम पवित्रस्थान में अपनी भेंटें ले आ सकते हो, और तब तुम्हें वेश्या, याजक, या पुजारिन, जो बाल या अशेरा के मन्दिर से सम्बन्धित है, के साथ रहने का सौभाग्य मिलेगा, और तुम आप

यहां वेश्या के साथ आनंद का एक छोटा सा समय बिता सकते हैं, और उम्मीद है कि इसे लागू करके, जिसे हम मानव प्रजनन संस्कार कह सकते हैं, आप बाल को अपनी भूमि को उपजाऊ बनाने के लिए प्रोत्साहित करेंगे। तो, आप जानते हैं, मैं सनकीपन से कल्पना करता हूँ कि इस्राएली अपने कनानी पड़ोसियों से संबंध बनाने की कोशिश कर रहे हैं और कह रहे हैं, आप जानते हैं, आओ याहवे की पूजा करें। वह सच्चा भगवान है, और कनानी जवाब दे रहे हैं, आप मजाक कर रहे हैं।

देखो हम चर्च में क्या कर सकते हैं। हमने अच्छा समय बिताया। लेकिन वैसे भी, स्पष्ट रूप से यह एक महान विकृति है, और इसकी कामुकता, हम कनान के पुरातात्विक अवशेषों में देखते हैं, और दूसरी बात यह है कि यह कनानवासी हैं जो बाल बलि के महान अभ्यासी थे।

वास्तव में मिस्रवासी या कनानी नहीं, और कनानी अंततः, बाद के समय में, वे ही थे जो वर्तमान लेबनान में भी थे, और उनके पास भूमध्य सागर के पार जाने वाले जहाज थे, और कनानी अंततः उत्तरी अफ्रीका में बस गए। , और उन्होंने कार्थेज में एक महान आधार स्थापित किया, और वह बाद के वर्षों में कनानियों के लिए एक महान शहर था, और कार्थेज में कम से कम एक बहुत ही महत्वपूर्ण कमरा पाया गया है जिसे चार्नेल हाउस कहा जाता है, जिसमें दर्जनों और दर्जनों के ढेर थे इस चीज़ के कोने में शिशुओं की खोपड़ियाँ हैं, और जाहिर तौर पर यह एक जगह है, यह शिशु बलि का स्थान था, और हां, सभी राष्ट्र भगवान की दृष्टि में दुष्ट थे, लेकिन कनानियों का पाप ऊपर और परे तक बढ़ गया था फ़िलिस्तिनों या मिस्रियों या मोआबियों या अन्य लोगों का प्रकोप, इसलिए यदि बुतपरस्त राष्ट्रों के बीच कोई सज़ा का हकदार था, तो वह निश्चित रूप से कनानी थे, इसलिए हम यह नहीं कह सकते, ठीक है, आप जानते हैं, भगवान इन गरीब कनानियों के साथ अन्याय कर रहे हैं, वह मोआबियों या अम्मोनियों या किसी और को दण्ड दे सकता था। ठीक है, हाँ, सभी ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हो गए हैं, लेकिन कनानवासी विशेष रूप से परमेश्वर का अपमान करने और पाप करने इत्यादि में माहिर थे। तो यह दूसरा कारण है।

पहला कारण, सारी भूमि भगवान की है। दूसरा, कनानी स्वयं, निस्संदेह, महान पापी थे। परमेश्वर द्वारा इस्राएलियों को कनानियों को बाहर निकालने का आदेश देने का तीसरा कारण उनके स्वयं के लिए था, अर्थात् उनकी पूजा की शुद्धता के लिए, और इसके साथ जुड़ा हुआ एक शब्द है जो हम आपको देंगे।

यह हराम शब्द है, और H का उच्चारण ऐसे किया जाता है जैसे आप अपना गला साफ़ कर रहे हों, हराम, और इसका अर्थ है पूर्ण विनाश या विनाश। पुराने संस्करण इसे प्रतिबंध कहते हैं। जो क्रिया इसके साथ जाती है वह संज्ञा है, जो क्रिया इसके साथ जाती है वह हराम है, और इसका अर्थ है विनाश को समर्पित करना, प्रतिबंध के तहत रखना, उस प्रभाव के लिए कुछ, और यह व्यवस्थाविवरण और जोशुआ में कई बार पाया जाता है।

यह उन कई छंदों में है जिन्हें हम यहां पहले ही देख चुके हैं। हम इस शब्द के बारे में भी सोच सकते हैं, यह शब्द है, इसका अनुवाद कभी-कभी प्रभु को कुछ समर्पित करने के रूप में किया जाता है, और इसलिए हमने जेरिको में देखा है, उदाहरण के लिए, सात दिनों तक जेरिको को घेरने और उसकी परिक्रमा करने के समारोह के पूरे विचार को याद रखें। वह इसे एक धार्मिक

संदर्भ में रख रहा है, और ऐसा लगता है मानो शहर ही प्रभु के लिए इसराइल का बलिदान बनने जा रहा था।

वे कोई भी सामान नहीं रख पाए। यह विनाश के लिए समर्पित था, और चीजों को आम उपयोग के लिए निषिद्ध कर दिया गया था। उन्हें देवता बनना था, उनके अपने नहीं।

यह एक प्रकार की भेंट होनी थी। दिलचस्प बात यह है कि यह प्रथा विशेष रूप से इज़राइल तक ही सीमित प्रतीत होती है। हिब्रू भाषा अपने आस-पास की संस्कृतियों की कई भाषाओं के समान है, जिसे हम सेमेटिक भाषा कहते हैं उसका बड़ा परिवार, और हिब्रू में कई शब्द हैं जो अन्य भाषाओं में पाए जाते हैं, लेकिन यह शब्द, हराम, इसके अलावा कहीं भी नहीं पाया जाता है। इज़राइल एक बार को छोड़कर.

यह मोआबाइट पत्थर नामक प्रसिद्ध शिला में पाया जाता है। उस समय मोआबियों का राजा मेशा नाम का राजा था, और वह अहाब और उसके पिता के समय का राजा था, मेशा अपने शत्रुओं में से एक को विनाश के लिए समर्पित करने की बात करता है। मोआबी भाषा हिब्रू से बहुत मिलती-जुलती है, और वे करीबी पड़ोसी थे, लेकिन इससे परे, यह एक ऐसी प्रथा है जो पुराने नियम के लिए अद्वितीय लगती है, और बेहतर या बदतर के लिए, इसका न केवल सैन्य महत्व है, बल्कि यह इसका एक प्रकार से धार्मिक महत्व और संदर्भ है।

अब एक मिनट के लिए इज़राइल के बारे में सोचें। उन्होंने मिस्र में 400 साल गुलामी में बिताए थे, और उत्पत्ति की पुस्तक के अंत में, वे इब्राहीम के वंशज, 70-75 लोगों के एक छोटे समूह के रूप में मिस्र में आए थे। इस बीच, वे मिस्र में, यदि अधिक नहीं तो, हजारों की संख्या में बढ़ गए थे, और जब पलायन शुरू हुआ, तो यह एक राष्ट्र के रूप में अधिक था, लेकिन एक राष्ट्र के रूप में उनकी अपनी आत्म-जागरूकता की भावना नहीं थी।

वे मिस्रवासियों के अधीन हैं। मूसा, जब भगवान उसे बुलाते हैं, तो आप याद कर सकते हैं कि वह नेता के रूप में अपनी पहचान के बारे में असुरक्षित महसूस करता है। वे उसे स्वीकार करेंगे या नहीं? क्या वे स्वयं को इस्राएलियों के रूप में, एक ऐसे राष्ट्र के रूप में पहचानेंगे जिसे बाहर निकलने की आवश्यकता है, इत्यादि?

इसलिए, इज़राइल में मिस्र से आने वाली राष्ट्रीय पहचान की बहुत ही नाजुक भावना है। जब वे मिस्र से बाहर निकलते हैं, तो वे कैसे जीवित रहते हैं? मूलतः, वे नहीं कर सकते. जीवित रहने की दृष्टि से वे एक बहुत ही नाजुक राष्ट्र हैं, और भगवान को उनके लिए रेगिस्तान में पानी, और मन्ना, और बटेर, इत्यादि उपलब्ध कराना होगा।

तो, वे बहुत अस्थिर तरीके से कनान में आ रहे हैं। उन्हें अभी कानून प्राप्त हुआ है. माउंट सिनाई में उन्हें जो कुछ मिला, उसे आत्मसात करने के लिए यह बहुत बड़ी रकम है।

वे 40 वर्षों से भटक रहे हैं, और इसलिए, एक अर्थ में, भूमि को साफ़ करने, कनानियों को बाहर निकालने, इज़राइल को शून्य से शुरू करने के लिए एक जगह पर बसने देने का आदेश यह कहने का एक तरीका है कि इज़राइल के विश्वास की आवश्यकता है बढ़ना। एक राष्ट्र के रूप में,

बल्कि एक आध्यात्मिक समुदाय के रूप में भी इज़राइल की पहचान की भावना को ऐसी मिट्टी में विकसित होने में सक्षम होने की आवश्यकता है जो किसी भी अन्य प्रथाओं से दूषित न हो, और यह उन कुछ छंदों के पीछे है जो हम पहले से ही व्यवस्थाविवरण में पढ़ चुके हैं, जहां से बाहर निकाला जाता है राष्ट्र का। क्यों? ताकि वे तुम्हें दूर न ले जाएं।

तो आप वफादार रहेंगे. कनानियों को नष्ट करने और बाहर निकालने के परमेश्वर के आदेश का तीसरा कारण अखंडता के लिए है, इस्राएल की अपने लिए पूजा की भावना की सुरक्षा के लिए, अब याद रखें कि जब इस्राएल ने ऐसा करने में उपेक्षा की, तो उन्हें परिणाम भुगतने पड़े, और इसलिए जब इस्राएल ने इसका उल्लंघन किया। जेरिको, अचन अध्याय 7 में समर्पित कुछ चीजों को लेने के बाद, उन्हें परिणाम भुगतना पड़ा, ऐ में हार। हम न्यायाधीशों की पुस्तक में वर्षों बाद के बारे में सोचते हैं, बस समर्थन करने के लिए, जोशुआ में, उन अध्यायों में जो अभी भी आने वाले हैं, अध्याय 13 से 21, बार-बार, छह या आठ बार, हमें बताया गया है कि ऐसा और ऐसी जनजाति, क्योंकि वे अपनी भूमि में बस रहे थे, कनानियों को अपने क्षेत्र से बाहर निकालने में असमर्थ थे, और इसलिए लोगों को पूरी तरह से नष्ट करने या पूरी तरह से बाहर निकालने का आदेश दिया गया ताकि उनका धर्म अपवित्र हो जाए, इसका अच्छी संख्या में पालन नहीं किया गया। जनजातियों के बारे में, और वे हैं, इसके बारे में जोशुआ में और कुछ नहीं कहा गया है, लेकिन वे एक तरह से छोटे टिक-टिक वाले टाइम बम हैं जो न्यायाधीशों की किताब तक पहुंचने पर फट जाते हैं, और न्यायाधीशों की पुस्तक कहती है कि यह जनजाति, वह जनजाति, और दूसरी जनजाति, क्योंकि वे कनानियों को बाहर नहीं निकाल सके, तब ऐसा हुआ, और न्यायाधीशों की पुस्तक में प्रक्षेपवक्र अनिवार्य रूप से नैतिक दिवालियापन का एक नीचे की ओर प्रक्षेपवक्र है, और इसका एक हिस्सा इसलिए है क्योंकि इज़राइल ने अपनी अखंडता को संरक्षित नहीं किया पूजा का।

उन्होंने कार्रवाई जारी रखी. तो यह इज़राइल द्वारा कनानियों को बाहर निकालने का तीसरा कारण है। चौथा कारण, कोई बड़ा नहीं, बल्कि चौथा कारण इब्राहीम की वाचा को पूरा करना होगा, और अगर हमने उत्पत्ति 12 में समीक्षा की गई वाचा के खंड को देखा है, तो यह कहता है कि भगवान ने इब्राहीम से कहा, मैं आशीर्वाद दूंगा जो तुम्हें आशीर्वाद देते हैं, दूसरा पहलू यह है कि जो तुम्हारा अनादर करते हैं, मैं उन्हें शाप दूंगा, और तुम्हारे द्वारा पृथ्वी के सारे कुल आशीष पाएंगे।

तो, एक अर्थ में, हम यहोशू की पुस्तक में, विशेष रूप से अध्याय 9, और अध्याय 11 में पाते हैं, उन दोनों अध्यायों की शुरुआत में, हमारे पास कनानी राजाओं का गठबंधन है जो इज़राइल के खिलाफ आक्रामक के रूप में आ रहे हैं। वे इज़राइल पर हमला कर रहे हैं. तो, एक अर्थ में, उन्हें नष्ट करने की प्रतिक्रिया इब्राहीम से किए गए भगवान के वादे की पूर्ति है, जिसमें कहा गया है कि यदि लोग आपका विरोध करते हैं, तो मैं उनकी देखभाल करूंगा, और यह निश्चित रूप से अध्याय 9 और अध्याय 11 में गठबंधन पर लागू होता है।

अब जाहिर है, इससे पहले, जेरिको में, हमारे पास कनानी लोग उस तरह से उसका विरोध नहीं कर रहे थे, लेकिन कनानियों का ईश्वर के विरोध में होने का विचार मौजूद है। राहब वास्तव में

एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जो अध्याय 9, गिबोनियों के साथ, एक अलग तरीके से प्रतिक्रिया देता है। तो हमारे पास यह बात है कि सारी भूमि ईश्वर की है।

यह वास्तव में कनानियों का जन्मसिद्ध अधिकार नहीं है। दूसरी बात, कनानियों का पाप उनके स्वयं के विनाश का बीज है। तीसरा है, इज़राइल की पूजा की सुरक्षा।

चौथा, इब्राहीम वाचा की पूर्ति। और फिर पांचवां बिंदु, मैं कहूंगा कि यह एक आदेश है, हम नए नियम के परिप्रेक्ष्य से सोचते हैं, या नए नियम के बाद के परिप्रेक्ष्य से, 21वीं सदी में हमारे दृष्टिकोण से, हजारों वर्षों में पीछे मुड़कर देखना आसान है नए नियम और पुराने नियम और उन सभी चीज़ों के बारे में सोचें जो एक तरह से चपटी हैं, और हमें पुराने नियम के माध्यम से समय के अंतराल, समय की प्रगति का कोई एहसास नहीं है। पुराने नियम का इतिहास, इब्राहीम से लेकर, कम से कम, एब्रा और नहेमायाह तक, 1,500, 1,600 वर्षों का है, और यह एक लंबा समय है।

और कुल मिलाकर, कई लड़ाइयाँ हैं, कई संघर्ष हैं, लेकिन दुश्मन को पूरी तरह से नष्ट करने के आदेश समय और स्थान में सीमित हैं। परमेश्वर ने इस्राएलियों को यह कहने के लिए स्वतंत्र शासन नहीं दिया, कि जब भी तुम किसी परदेशी से मिलो, तो उसे तलवार से मार डालो। और कभी-कभी ईसाइयों का पुराने नियम के बारे में यही दृष्टिकोण होता है कि पुराना नियम लड़ाइयों और युद्धों से भरा हुआ एक नियम है, और वे हमेशा अपने दुश्मनों को मार रहे हैं इत्यादि।

जवाब है नहीं। यह समय और स्थान में सीमित एक आदेश है, अर्थात् उस विशिष्ट समय के लिए जब उन्होंने जोशुआ और लोगों के अधीन पहली बार कनान में प्रवेश किया था। मैं कहूंगा कि ईश्वर इस्राएल को शत्रुओं या विदेशियों से किस प्रकार जोड़ना चाहता था, इसका डिफ़ॉल्ट तरीका इब्राहीम की वाचा में निहित है।

तेरे द्वारा पृथ्वी के सारे कुल आशीष पाएँगे। हमने दूसरे खंड में अजनबी, विदेशी, परदेशी, गेर, विदेशियों के बारे में बात की है जो इज़राइल में पैदा नहीं हुए थे, लेकिन इज़राइल में निवास किया, उन्होंने इज़राइल के भगवान को अपनाया। यदि इज़राइल हमेशा उनका सामना कर रहा था और उन्हें तलवार से मार रहा था तो वे इज़राइल के ईश्वर को कैसे अपना पाएँगे? तो, परमेश्वर वास्तव में जो चाहता था वह अन्यजातियों के लिए था, राष्ट्र उसे गले लगाएं, न कि उसे अस्वीकार करें।

इसलिए, कनानियों को नष्ट करने का यह आदेश उन कारणों से इस समय और इस स्थान तक ही सीमित था जिनके बारे में हम पहले ही बात कर चुके हैं। यह कोई सामान्य आदेश नहीं है कि उन्हें ऐसा कभी भी और किसी भी स्थान पर करना चाहिए। और फिर अंत में, छठा बिंदु, मैं कहूंगा कि बाइबिल में जो कहानियाँ हम देखते हैं, उनमें यहोशू भी शामिल है, इन चीज़ों के पीछे हमेशा एक तरह की स्थिति होती है।

इसलिए बार-बार, हमारे भविष्यवक्ताओं में, भगवान कहते हैं, मैं तुम्हें दंडित करने जा रहा हूँ, इसराइल। मैं अशशूर को दण्ड देने जा रहा हूँ। मैं मोआब को दंडित करने जा रहा हूँ, चाहे वे कोई भी हों, जब तक कि वे पश्चाताप न करें।

और यदि पश्चात्ताप है, तो भगवान पीछे हट जाते हैं और आशीर्वाद देते हैं। तो, यह विचार सबसे पहले व्यवस्थाविवरण में कहा गया है, जो लोग, यदि तुम मेरी बात मानोगे, तो मैं तुम्हें आशीर्वाद दूंगा। यदि तुम अवज्ञा करोगे तो मैं शाप दे दूंगा।

फिर से, इब्राहीम की वाचा में निहित, जो तुम्हें आशीर्वाद देंगे, मैं उन्हें आशीर्वाद दूंगा। जो लोग शाप देते हैं, मैं शाप दूंगा, वगैरह-वगैरह। वह यहां भी पाया जाता है।

और इसलिए, जब हमने यह चर्चा शुरू की, तो हमने व्यवस्थाविवरण में कुछ अंशों को देखा जो ऐसा लग रहा था जैसे वे बिना शर्त हैं। बस सभी गिदोनियों को नष्ट कर दो और किसी को भी जीवित मत छोड़ो। बहुत, बहुत निरपेक्ष लगता है।

और फिर भी, हम पाते हैं कि राहब वह है जो बच गया है। हम पाते हैं, फिर से, एक अलग कोण से, गिदोनियों को बचा लिया गया है, लेकिन गिदोनियों की कहानी में एक सकारात्मक फुटनोट है जिसके बारे में हम तब बात करेंगे जब हम पाठ में अध्याय नौ के बारे में बात करेंगे। तो मेरा विचार यह है कि यदि, योना और नीनवे की कहानी भी याद रखें।

नीनवे वह महान नगर था जिसे परमेश्वर ने कहा था, मैं नष्ट करने जा रहा हूँ। यह एक बहुत ही बिना शर्त, पूर्ण बयान की तरह लग रहा था। फिर भी 40 दिन के बाद नीनवे नष्ट हो जाएगा।

योना यही कहता है। और तब नीनवे नष्ट नहीं हुआ। क्यों? क्योंकि उन्होंने पश्चात्ताप किया।

तो, मेरा विचार यह है कि यदि जेरिको के निवासियों, मान लीजिए, या अधिक व्यापक रूप से, कनान के अन्य शहरों ने उसी तरह से प्रतिक्रिया दी होती जैसे कि राहब ने किया था, या यदि उन्होंने उसी तरह से प्रतिक्रिया दी होती जैसे कि नीनवे के लोगों ने वर्षों बाद किया था, वे वह विनाश न होते। उनके लिए यह एक सुखद निर्णय होता। यहाँ तक कि उन्हें नष्ट करने के कठोर आदेशों के बावजूद, यदि उन्होंने सच्चा पश्चात्ताप किया होता, झूठे तरीके से नहीं, बल्कि यदि सच्चा पश्चात्ताप होता, तो वे आदेश वापस ले लिए गए होते।

तो, यह एक जटिल समस्या है। यह एक कठिन समस्या है, विशेष रूप से आधुनिक समय में, क्योंकि हमें लगता है कि यह मुद्दा इस्लामी चरमपंथियों, इस्लामी जिहाद में देखी जाने वाली कुछ चीजों के साथ ओवरलैप होता हुआ प्रतीत होता है। और बहुत से लोग आश्चर्य करते हैं कि क्या जिहाद बाइबिल में हARAM के समान है? और मैं कहूंगा कि ऐसे सतही तत्व हैं जो समान दिखते हैं, लेकिन उनमें गहरा अंतर है।

और मुझे आशा है कि जिन छह चीजों के बारे में हमने बात की है, वे आपको इस पर काम करने में मदद करेंगी।

यह डॉ. डेविड हॉवर्ड रूथ के माध्यम से जोशुआ की पुस्तकों पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 13 है, कनानी भ्रमण का विनाश।